JUNE, 2017
Volume-6, Issue-22

ISSN 2278-4381

SHANTI E JOURNAL OF RESEARCH

Most Referred & Peer Reviewed
Multi Disciplinary E Journal of Research

CHIEF EDITOR
Dr. Rajeshkumar A. Shrimali
Assistant Professor
Shree H. S. Shah College of Commerce, Modasa.

CO-EDITOR
P.R. SHARMA

EXECUTIVE EDITOR
Rambhai V. Baku

http://www.shantiejournal.com/ ISSN 2278-4381

SHANTI
E
JOURNAL OF RESEARCH

ISSN 2278-4381

Multi Disciplinary and Peer-Reviewed Research Journal in India

Chief Editor

Dr. Rajeshkumar A. Shrimali
Assistant Professor
Department of Commerce
Shree H.S.Shah College Of Commerce,Modasa Dist- Arrvalli

PUBLISHED BY

http://www.shantiejournal.com/

JUNE-2017, VOLUME-6, ISSUE-22

ISSN :2278-4381

10

श्रीमद् भागवतपुराणमें भाव एवं रस व्यंजना

डॉ.महेन्द्रकुमार ए.दवे
एसोसियेटप्रोफेसर,साहित्यविभाग
श्रीसोमनाथसंस्कृतयुनिवर्सिटी,वेरावळ

श्रीमद् भागवतमें दार्शनिकविचार की शृंखला दिखाई पडती हैं । दर्शन का उद्देश जीवन और विश्व का यथार्थ [ज्ञ]ान प्राप्त करना हैं। ज्ञान मनुष्य की सर्वश्रेष्ठ निधि होनेके कारण मनुष्य और पशुमें भेद हैं। धर्म और दर्शन में केवल इतना [भ]ेद हैं कि दर्शन अपने ही विचारों और कल्पनाओंका फल हैं। धर्म दूसरों के काल्पनिक विचारो में अन्धविश्वास और श्रद्धा को [अनु]मोदन देने वाला हैं दोनों ही कल्पनाके आधार पर स्थिर हैं। किन्तु 'श्रीमद् भागवत पुराण' भक्तिका श्रेष्ठतम ग्रन्थ होने के [स]ाथ साथ काव्यके महत्त्वपूर्ण तत्वों एवं गुणो से परिपूर्ण हैं। यह कविके भावुक और प्रतिभाशाली हृदयका मूर्त स्वरूप काव्य [है]। उसके सृजनमें जिन प्रमुख तत्त्वों का आश्रय लेना पडता हैं। वें भावतत्व एवं कल्पना तत्त्व कहे जाते हैं । विद्वानोंने इन्हे भावपक्ष और कला दो भागो में विभक्त किया हैं जिसे अनुभूति और अभिव्यक्ति पक्ष भी कहा जाता हैं। भावतत्त्व रागात्मक तत्त्वको कहते हैं।जो सहृदयों के मनोवेगों को तरंगित करता हैं वस्तुत: भाव-सौन्दर्य और रसानुभूति काव्य का प्राणतत्त्व हैं। कवि अनुभूत भावो को कल्पना के सौन्दर्य से अभिव्यक्ति पदान करके उसे रसमय काव्य का रूप देता हैं ।

साहित्य सृजन करने वाले कवि के कवित्त्वका मूलाधार भाव हैं। डॉ.त्रिगुणायत ने कहा हैं-'कविकी संस्कार जन्य प्रतिभा जीवनके विविध वातावरणों के मार्मिक चित्रोको आत्मसात् करती रहती हैं। भाव या मनोवेगों के किसी विशेष उद्रेक द्वारा यह एकत्रित चित्र वाग्धारा के माध्यमसे काव्यका निर्माण करते हैं। काव्यमें बुद्धि सदैव भावानुगामिनी रहती हैं यद्यपि विद्वानोंने भिन्न-भिन्न तत्त्वोंकी महत्ता भिन्न-भिन्न प्रकार से स्वीकार की हैं तथापि काव्यमें भावोंका होना स्वभाविक एवं अपेक्षित हैं।

भागवत की भाषामें अन्य पुराणे जैसी सरलता होने के बावजूद भिन्न भी लगती हैं। सामान्यत: कहा [ज]ाता हैं कि भागवतके समयमें संस्कृत जीवन्त भाषा नहीं थी। श्री चिन्तामणि वैद्य 'The date of the Bhagavata' लेखमें [इस]का विरोध करते हुए बारहवी शताब्दीका जयदेव रचित गीतगोविंदका उदाहरण देते हैं और कहते हैं कि "Hence it would be quite improper to call it a product of the age of decadence" डॉ.वीन्टरनीड्झ इसकी भाषाका मूल्यांकन करते हुए कहते हैं कि "It hears the Stamp of a unified Composition and deservers to be appreciated as Literary Production on account of its Language , Style and Metre",[1]

भाव' शब्द का सर्वप्रथम विवेचन भरतमुनिने अपने गन्थ "नाट्यशास्त्र"में किया हैं। उनके अनुसार भावित करें वे भाव हैं । भाव मानसारोवर में क्षण-क्षण उत्पन्न होने वाले बुलबुले हैं। मानव हृदय विविध प्रकार के भावों से परिपूर्ण हैं। लेखन कला के लिये भाव विचार कल्पना आवश्यक तत्त्व हैं। सामान्य कोटिका लेखक भी भावों के माध्यम से जन-समाज को प्रभावित करने की क्षमता रखता हैं। तब देवस्वरूप भगवान् 'व्यास' द्वारा रचित "भागवत पुराण" बहुमूल्य भावरत्नों से पूर्ण सागर ही हैं। भाव सौंदर्य जहाँ जीवन को अखण्डता और एकता का प्रतिष्ठाता हैं वहाँ आनन्द का प्रचार कर्ता भी हैं । महामुनि व्यास की भावानुभूति का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक हैं । भावोंका सुन्दर सामंजस्य श्रीमद् भागवतमें लक्षित हैं। भाव-सौंदर्यके मूलत: दो रूप हैं। १.- भाव निरूपण और २.- रस निरूपण

१.- History of Indian Litareture, Vol.-1-pp.556

काव्य या साहित्य का मूलतत्त्व भाव ही है। भावतत्त्व प्राणी की आत्मा में ओतप्रोत रहता है लेकिन जहाँ अनुभूति अभिव्यक्ति की तीव्रता हो जाती है तब भाव कवि हृदय का स्पर्श करने लगते हैं। श्रीमद्भागवत के कवि हृदयमें अनेक भावों का ... भागवतपुराणमें ... विभिन्न प्रसंगों और भिन्न-भिन्न स्थितियों में मिलता है। ... सहानुभूति की गति बढ़ जाती है। प्रेम या रति ऐसा व्यापक भाव है जिससे प्राणिमात्र प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता. मानव ही नहीं देव और ऋषिमुनियों के हृदयमें भी रति भाव सहज रूपमें वर्तमान रहता है। श्री कन्दर्प के हृदयमें देवहूति के प्रति ... जन्म लेता है जिसे देखकर विश्वावसु गन्धर्व अचेत हो गया था।२

भागवत के वर्ण विषयकी गरिमा, विस्तार एवं व्यापकता ऐसे काव्य के श्रेष्ठ रचनात्मक काव्य सिद्ध करते हैं। भागवत वेदरूपी वृक्षका सुपरिपक्व सुस्वादिष्ट फल है।३ उसका स्वरूप शृङ्गारित भावों का कोश ही है। गोपियों का जीवन ... है। अपने सौन्दर्य और लीलाओंसे कृष्ण ने सभी गोपियों में ऐसी प्रेमानुभूति जाग्रत की है जिसकी अनन्यता और समर्पण भावना ने उन्हें अमर प्रेमिका बना दिया।

भागवतपुराणमें मानव हृदय के सभी भावोंका समाहार किया गया है। उत्साह जीवन का अनिवार्य भाव है इसके अभावमें जीवन व्यर्थ है। इसके अनेक क्षेत्र हैं। युद्धादि में यह भाव विशेष रूपमें लक्षित होता है। यद्यपि भागवत पुराणमें भक्ति की प्रधानता है तथापि अन्य भावोंका भी यथोचित् प्रसंग वर्णन किया है। भावोंकी निकृष्टतम और उत्कृष्टतम दोनों प्रकार से अभिव्यक्ति की गयी है। हृदय के तुच्छ भावों व्यक्त करने वाले ईर्ष्या,द्वेष, क्रोध आदि भाव हैं। इसी प्रकार त्याग,दान,प्रेम,सेवा आदि ऐसे भाव हैं जो मानवको देवत्व स्तर पर प्रतिष्ठित कर देते हैं।

भागवत की भाव माधुरी के सौन्दर्यका क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है क्योंकि व्यासकी अनुभूतिका क्षेत्र भी असीमित और विस्तृत है। उनके हृदय सागरमें आविर्भूत अनेक भावऊर्मि भागवतके विभिन्न स्थलों पर अभिव्यक्त है।

भागवतकारने भक्ति-भावनाको मूलाधार बनाया है इसलिये अनेक भावोंका रमणीय और सुन्दर चित्रण होते हुए भी उनका समाहार भक्तिके केन्द्रीय भावमें निहित है। जिस कविमें चिन्तन और अनुभव कल्पना शक्ति जितनी अधिक मात्रामें होगी उसका भावसौन्दर्य भी उतना ही प्रभावपूर्ण होगा। महान् कवियों में एक व्यासजी ने अपनी साधना के समस्त ज्ञान- भक्ति को प्राप्त कर लिया था। इसलिये वे भाव जगत् को विस्तार देने में समर्थ हुए। काव्यका मूल सौन्दर्य भावों की अनुभूतियों में है जो बाह्य जगत के संवेदन से हृदयजगत् के अंतर्गत विविध मनोवेगों के रूपमें संचित रहते है। भागवत में भारतीय चेतना का गौरव भक्तिके आलोकमें मानवों का पथ प्रदर्शक है। अत: उसकी समस्त भावनायें उदात्त स्वरूपमें संकलित हुई हैं। अत: उसका भाव सौन्दर्य व्यक्तित्व की दृष्टि से सरल और सरस है। वस्तुत: भागवत की सृष्टि ही भाव सौन्दर्य पर आधारित है जो कवि के रागतत्त्व से प्रेरित हुई है। भागवत की कथावस्तु परमानन्ददायी होने को कहा है।४ भारतीय साहित्यकी आधारशिला रस सिद्धांत है। काव्यानन्द को ब्रह्मानन्द सहोदर कहा है क्योंकि वह लोकोत्तर आनन्द है।५ भरतमुनि रससिद्धांत का प्रेरक हैं जिन्होंने साहित्यमें रस को आत्मा माना है। भागवतमें भक्ति को उत्तम रसके रूपमें स्थान दिया है। भगवत लीला का स्मरण मानवीका परम कर्तव्य है।

२.- यां हर्म्यपृष्ठे क्वणदङ्घ्रिशोभां विक्रीडतीं कन्दुकविह्वलाक्षीम्।
विश्वावसुर्न्यपतत्स्वाद्विमानाद् विलोक्य सम्मोहविमूढचेताः॥
- श्रीमद् भागवत पुराणम्- ३-२२-१७

३.- निगम कल्प तरोर्गलितं फलं ...... शुकमुखादमृतद्रवसंयुतम्। - श्री भागवतपुराणम्- १-१-३

४.- तव कथामृतं तप्तजीवनं कविभिरीडितं कल्मषापहम्।
श्रवणमङ्गलं श्रीमदाततं भुवि गृणन्ति ते भूरिदा जनाः॥
- भागवतपुराणम्- १०-३१-८.

५.- काव्यप्रकाश- सं. श्रीनिवासशास्त्री,पृ.- १३३.

पंचम स्कन्धमें श्रीकृष्ण प्रति मनकी सतत गतिकी आसक्तिको भक्ति माना गया है। भागवतमें चौसठ प्रकारकी भक्तिका सुन्दर वर्णन मिलता है। भक्तिके अलावा अन्य रसोंका भी समुचित परिपाक हुआ है।६ तथा शृङ्गारको रसराज कहा है।७ श्रीमद् भागवत कृष्ण प्रेमका स्पर्श किया है जिसे श्रीकृष्ण की मधुर चेष्टाओं और मधुर मुस्कानने परिपक्व बना दिया है। रास पञ्चाध्यायीमें शृङ्गारका सुन्दर रूप प्रस्तुत किया गया है।८ शृङ्गारका लौकिक रूप दिखाकर भागवतकारने अन्तमें देवताओं के द्वारा पुष्पवृष्टि कराकर अलौकिकता प्रदान की है। भागवतमें विप्रलम्भ शृङ्गार का रूप भ्रमरगीत के अन्तर्गत

ISSN :2278-4381

मिलता हैं । 'श्रीव्यास'का धर्म,भक्ति और मर्यादाका आदर्श स्थापित करना हैं ।अत: भागवतका शृङ्गार वर्णन अद्वितीय और लोकोत्तर हैं ।इसके अलावा करुण, रौद्र,वीर , भयानक, अद्भूत ,शान्तादि रसोंका वर्णन भी भागवतमें मिलते हैं। भक्तिभावके साथ वात्सल्य रस की अद्भूत सृष्टि'भागवत'में वर्तमान हैं । कृष्ण की बाल लीलाओंमें वात्सल्य पूर्ण क्रोध हैं । फिर भी भागवतका मूलतत्त्व भक्ति होने से इसमें सभी रसों का समाहार हो जाता हैं

संक्षेपमें कहा जाये तो श्रीमद् भागवत 'भाव –रस व्यंजना तथा भक्तिकी दृष्टिसे सफल और भावपूर्ण रचना हैं । जिस प्रकार व्यासने भावोंकी अभिव्यक्ति में व्यापकता ,सरसता और मार्मिकता प्रस्तुत की हैं ।उसी प्रकार उसकी रसानुभूति भी दिव्य एवं सहज हैं। श्रीमद् भागवत कृष्णलीलाओं से पूर्ण हैं गोपी विहार या रासक्रीडामें शृङ्गाररस का पूर्ण परिपाक हुआ हैं । वेणुगीतमें उस प्रेमका स्पर्श किया हैं जिसे श्रीकृष्णकी मधुर चेष्टाओं और मधुर मुस्कानने परिपकव बना दिया हैं । 'रास पञ्चाध्यायी'में शृङ्गारका सुन्दररूप प्रस्तुत किया गया हैं।

६.- वयं तु न विस्तृप्याम उत्तमश्लोक विक्रमे ।
यच्छ्रुण्वतां रसज्ञानां स्वादु-स्वादु पदे पदे ॥-भागवत पुराण- १-१-१९

७.- शृङ्गारप्रकाश:- खण्ड-१

८.- भागवतपुराण – १०-२०-३/४